OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 8

परमात्म ऊर्जा

इंतज़ार में नहीं रहना लेकिन एग्ज़ाम्पल बनना है

दिन-प्रतिदिन कदम आगे समझते हो? ऐसे भी नहीं सोचना कि अभी समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर लेंगे। लेकिन समय के पहले समाप्ति करके और इस स्थिति का अनुभव प्राप्त करना है। अगर समय आने पर इस स्थिति का अनुभव करेंगे तो समय के साथ स्थिति भी बदल जायेगी। समय समाप्त तो फिर अव्यक्त स्थिति का अनुभव भी समाप्त हो दूसरा पार्ट आ जायेगा। इसलिए पहले से ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करना है। कुमारियां दौड़ने में तेज़ होती हैं तो इस ईश्वरीय दौड़ में भी तेज़ जाना है। फर्स्ट आने वाले ही फर्स्ट के नज़दीक आयेंगे। जैसे साकार फर्स्ट गया ना। लक्ष्य तो ऊंचा रखना है। लक्ष्य सम्पूर्ण है तो पुरुषार्थ भी सम्पूर्ण करना है, तब ही सम्पूर्ण पद मिल सकता है। सम्पूर्ण पुरुषार्थ अर्थात् सभी बातों में अपने को सम्पन्न बनाना। बड़ी बात तो है नहीं। जानने के बाद याद करना मुश्किल होता है क्या? जानने को ही नॉलेज कहा जाता है। अगर नॉलेज है और लाइट नहीं है तो वह नॉलेज ही किस काम की, उनको जानना नहीं कहा जायेगा। थ्योरी और चीज़ है। जानना अर्थात् बुद्धि में धारणा करना और चीज़ है। धारणा से कर्म ऑटोमेटिकली हो जाता है। धारणा का अर्थ ही है उस बात को बुद्धि में समाना। नॉलेजफुल बाप के हम बच्चे हैं और ईश्वरीय नॉलेज की लाइट मिघ्त हमारे साथ है। ऐसे समझ कर चलना है। नॉलेज सिर्फ सुनना नहीं लेकिन समाना है।

भोजन खाना और चीज़ है, हज़म करना और चीज़ है। खाने से शक्ति नहीं आएगी। हज़म करने से शक्ति कहाँ से आ जाती है, खाए हुए भोजन को हज़म करने से शक्ति रूप बनता है। शक्तिवान बाप के बच्चे और कुछ कर न सकें, यह हो सकता है? सदैव यही एम रखना चाहिए कि हम ऐसा कर्म करें जो मिसाल बन दिखाएं। इंतज़ार में नहीं रहना है लेकिन एग्ज़ाम्पल बनना है। बाप एग्ज़ाम्पल बना ना!

सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते...

जो लक्ष्य रखा जाता है उसको पूर्ण करने के लिए ऐसे लक्षण भी अपने में भरने हैं। ढीले कोशिश वाले कहाँ तक पहुँचेंगे? कोशिश शब्द ही कहते रहेंगे तो कोशिश में ही रह जायेंगे। एम तो रखना है कि करना ही है। कोशिश अक्षर कहना कमज़ोरी है। कमज़ोरी को मिटाने के लिए कोशिश शब्द को मिटाना है। निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है। निश्चयबुद्धि बनेंगे तो सभी का सहयोग भी मिलेगा। कोई भी कार्य करना होता है तो सदैव यही सोचा जाता है कि मेरे बिना कोई कर नहीं सकता तब ही सफलता होती है। आज से कोशिश अक्षर खत्म करो। मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा। बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से, वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था। अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है। अपने को नए समझेंगे तो कमज़ोरी के संकल्प आयेंगे। पा सकेंगे व नहीं। लेकिन मैं हूँ ही कल्प पहले वाला इस स्मृति से शक्ति आएगी। सदैव अपने को हिम्मतवान बनाना चाहिए। हिम्मत हारना नहीं चाहिए। हिम्मत से मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। बाप को याद करना सहज है व मुश्किल? सहज करने में सहज हो जाता है। यह तो मेरा कर्त्तव्य ही है। क्या करूँ यह संकल्प आने से मुश्किल हो जाता है। कभी भी अपने अन्दर कमज़ोर संकल्प को नहीं रहने देना। अगर मन में कमज़ोर संकल्प उत्पन्न भी हो जायें तो उनको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनना है। अब तक भी अगर कोशिश करते रहेंगे तो अव्यक्त कशिश का अनुभव कब करेंगे? जब तक कोशिश है तब तक अव्यक्त कशिश अपने में आ नहीं सकती। यह भाषा ही कमज़ोरी की है। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय के होंगे। ऐसी स्थिति बनानी है। सदैव चेक करो कि संकल्प रूपी फाउंडेशन मजबूत है। तीव्र पुरुषार्थी की चलन में यह विशेषता होगी जो उनके संकल्प, वाणी, कर्म तीनों ही एक समान होंगे। संकल्प ऊंच हों और कर्म कमज़ोर हों तो उनको तीव्र पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। तीनों की समानता चाहिए। सदैव यह समझना चाहिए कि जो माया कभी-कभी अपना रूप दिखाती है यह सदैव के लिए विदाई लेने आती है। लेकिन विदाई के बदले निमंत्रण दे देते हो। सदैव शिवबाबा के साथ हूँ, उनसे अलग होंगे ही नहीं तो फिर कोई क्या करेंगे। कोई बिज़ी रहता है तो फिर तीसरा डिस्टर्ब नहीं करता। समझते हैं तंग करने वाला कोई नहीं आये तो एक बोर्ड लगा देते हैं। आप भी ऐसा बोर्ड लगाओ तो माया लौट जाएगी।

कथा सरिता

दूसरों पर निर्भर न रहें...

पुराने समय की बात है। एक व्यक्ति बहुत ही आलसी था। वह कोई काम न कर बस इधर-उधर से किसी तरह खाने की व्यवस्था कर लेता था। एक दिन वह जंगल में घूम रहा था। तभी उसने देखा कि एक लोमड़ी लंगड़ाकर चल रही है। उसका एक पैर टूट गया था। लोमड़ी की ये हालत देखकर आलसी व्यक्ति सोच रहा था कि इस जंगल में अभी तक ये लोमड़ी जीवित कैसे है? इसका किसी ने शिकार नहीं किया, इसे खाने के लिए मांस कैसे मिलता होगा? वह व्यक्ति लोमड़ी के पीछे-पीछे चलने लगा, ताकि उसे मालूम हो सके कि इसके खाने की व्यवस्था कैसे होती है? तभी उस व्यक्ति को शेर की दहाड़ सुनाई दी। वह डर गया और तुरंत ही एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर छिप गया। कुछ ही देर में वहां शेर पहुंच गया। उसने मुंह में शिकार पकड़ रखा था। जब शेर लोमड़ी के सामने पहुंचा तो शेर के शिकार में से मांस का एक टुकड़ा गिर गया। शेर वहां से चला गया तो लोमड़ी ने मांस का टुकड़ा खा लिया। आलसी व्यक्ति ये सब देख रहा था। वह सोचने लगा कि भगवान कितना दयालु है। एक लोमड़ी के खाने की व्यवस्था भी भगवान कर रहे हैं। मैं भी पूजा-पाठ करता हूँ तो भगवान मेरे लिए भी खाने की व्यवस्था ज़रूर करेगा। ये सोचकर वह अपने घर आ गया। घर आकर आलसी व्यक्ति बैठ गया और इंतज़ार करने लगा कि भगवान की कृपा से उसे भी खाना मिल जाएगा। बैठे-बैठे तीन दिन गुज़र गए, लेकिन उसके खाने की व्यवस्था नहीं हो सकी। खाना न मिलने की वजह से वह बहुत कमज़ोर हो गया था। तभी उसके घर की ओर एक संत पहुंचे। आलसी व्यक्ति तुरंत ही संत के पास पहुंचा। व्यक्ति ने संत को पूरी बात बता दी। संत ने उससे कहा कि भगवान ने तुम्हें इस घटना के माध्यम से एक बहुत बड़ा संदेश दिया है। तुम एक लोमड़ी की तरह बनना चाहते हो, लेकिन भगवान तुम्हें शेर की तरह बनाना चाहता है। तुम दूसरों पर निर्भर रहना चाहते हो और भगवान तुम्हें दूसरों की मदद करने वाला इंसान बनाना चाहता है। आलसी व्यक्ति को संत की बात समझ आ गई और उसके बाद उसने आलस्य छोड़ दिया और कर्म करने लगा।

सीख :- हमें दूसरों पर निर्भर रहने वाला नहीं, दूसरों की मदद करने वाला इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिए। भगवान भी ऐसे लोगों की मदद करता है, जो दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

भगवान की निःस्वार्थ भक्ति में ही है सुख

एक व्यक्ति बहुत गरीब था। उसके पास कुछ भी नहीं था। वह बहुत दुःखी रहता था। वह एक दिन गांव के विद्वान संत के पास गया और अपनी सारी परेशानियां बता दीं। संत को उस पर दया आ गई और उन्होंने उस व्यक्ति को पारसमणि दे दी। संत ने कहा कि इससे तुम जितना चाहे उतना सोना बना लो। तुम्हारी गरीबी हमेशा के लिए दूर हो जाएगी।

पारस पत्थर से गरीब व्यक्ति ने बहुत सारा सोना बना लिया। अब वो धनवान हो गया। उसके पास सुख-सुविधा की हर चीज़ थी। अपार धन था। फिर भी वह दुःखी रहने लगा। अब उसे अपने धन की चिंता लगी रहती थी। उसे चोरों का डर सताता, राजा का डर लगा रहता। इतना धन होने के बाद भी उसके जीवन में सुख-चैन नहीं था। एक दिन वह फिर से उसी संत के पास पहुंचा। संत ने उससे कहा कि अब तो तुम्हारी गरीबी दूर हो गई है, तुम्हारे पास सब कुछ है। उस व्यक्ति ने कहा कि महाराज मेरे पास धन तो बहुत है, लेकिन मेरे जीवन में शांति नहीं है। आप कोई ऐसा उपाय बता दें, जिससे मेरा मन शांत हो जाए और मेरा सारा डर खत्म हो जाए। संत ने कहा कि ठीक है, वह मणि मुझे वापस दे दो। इसके लिए व्यक्ति ने मना कर दिया, उसने कहा कि महाराज मैं पारस पत्थर नहीं दे सकता, अब मैं फिर से गरीब नहीं बनना चाहता, आप मुझे कोई ऐसा सुख दीजिए जो अमीरी और गरीबी में बराबर मिलता रहे और मृत्यु के समय भी कम न हो। संत ने कहा कि ऐसा सुख तो भगवान की निःस्वार्थ भक्ति में ही मिल सकता है।

जो लोग बिना किसी स्वार्थ के भक्ति करते हैं, वे अमीरी-गरीबी और मृत्यु के समय, हर हाल में सुखी रहते हैं। जहाँ किसी भी तरह का स्वार्थ रहता है वहां दुःख हमेशा रहता है। दुःखों से मुक्ति चाहते हैं तो भगवान का ध्यान करें, लेकिन बिना किसी स्वार्थ के।

रोहतक-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव में ए.डी.सी. महेंदर पाल जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रक्षा दीदी।

नोएडा-उ.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् आनंद धाम आश्रम में सुधांशु जी महाराज व डॉ. अर्चिका दीदी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अदिति,माउण्ट आबू,ज्ञानसरोवर।